अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

आध्यात्मिक सुखाकांक्षा मंगलकारी: शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण

-आचार्यश्री अपनी श्वेत सेना संग पहुंचे गीतान्जलि स्कूल

-उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने प्रदान की पावन प्रेरणा

-10 फरवरी से आरम्भ होगा तेरापंथ धर्मसंघ का महाकुम्भ मर्यादा महोत्सव

09.02.2019 पीलामेडु, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु): लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का पावन संदेश देते और अपने दो सुकोमल ज्योतिचरण से कोयम्बत्तूर के मानों कोने-कोने को पावन बनाने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ शनिवार को प्रातः पुगलिया इनक्लेव से मंगल प्रस्थान किया। रास्ते में अनेकानेक श्रद्धालुओं को दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित करते हुए गतिमान हुए।

आचार्यश्री लगभग दस किलोमीटर का विहार कर 155वें मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम स्थल के समीप स्थित गीतान्जलि मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। विद्यालय के आॅनर श्री अलगिरीस्वामी शिक्षकों व विद्यार्थियों के आदि के साथ आचार्यश्री का भावभीना अभिनन्दन किया। स्कूल के बच्चे गणवेश में सजे बैंड-बाजे की धुन के द्वारा आचार्यश्री का वंदन कर रहे थे। आचार्यश्री ने सभी को मंगल आशीष प्रदान किया। आज से मर्यादा महोत्सव की सम्पन्नता तक का प्रवास इसी विद्यालय परिसर में निर्धारित है।

विद्यालय परिसर में बने प्रवचन पंडाल में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को सुखाकांक्षा रखनी चाहिए। एक भौतिक सुख होता है, इन्द्रियजन्य सुख होता है और दूसरा अभौतिक, आध्यात्मिक सुख होता है। आध्यात्मिक सुखों की कामना प्रशस्त कामना होती है। आदमी के जीवन में कामनाएं चलती हैं। एक कामना बहुत अधम स्तर की होती है, निंदनीय होती है। जैसे किसी का बुरा चाहना, किसी का व्यापार ठप करने का प्रयास करना, दूसरों को कष्ट देने का प्रयास करना-ऐसी कामना अधम स्तर की होती है। अपने लिए भौतिक सुख की कामना करना मध्यम स्तर की कामना होती है। किसी का कल्याण करने की कामना अथवा अपना कल्याण करने की कामना, मोक्ष पाने की भावना उत्तम भावना है।

आदमी को आध्यात्मिक के लिए विनय का प्रयोग, श्रुत का अभ्यास, तपस्या करना और संयम आचार का पालन करना चाहिए। श्रुत की आराधना से भी सुख मिलता है। शास्त्रकार ने श्रुत के आराधन के चार लाभ बताए हैं। पहला लाभ अध्ययन से ज्ञान मिलता है। दुनिया में ज्ञान पवित्र चीज है। पढ़ने से ज्ञान की प्राप्ति होती है और अज्ञान दूर होता है। ग्रंथों में स्वाध्याय को सबसे बड़ा तप बताया गया है। श्रुत की आराधना करने से चित्त भी एकाग्र हो सकती है, यह दूसरा लाभ है। आदमी ज्ञान प्राप्त कर आदमी सन्मार्ग को पर चलता है। यह श्रुताराधना का तीसरा लाभ है। ज्ञानी आदमी अपने ज्ञान के माध्यम से किसी अज्ञानी का अज्ञान दूर कर उसे भी कुमार्ग से सन्मार्ग पर लाता है अथवा लाने का प्रयास करता है, यह श्रुताराधना का चैथा लाभ है। विद्यार्थियों में भौतिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान का विकास करने का प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थियों में विनय का भाव पुष्ट हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने आरम्भ होने वाले मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में अपना मंगल आशीष प्रदान करने के उपरान्त सम्मुख उपस्थित विद्यार्थियों को विशेष प्रेरणा प्रदान की। आचार्यश्री के आगमन से हर्षित विद्यालय के आॅनर श्री अलगिरीस्वामी ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। श्रीमती हेमा भंसाली ने भी अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

10 फरवरी से तेरापंथ धर्मसंघ का महाकुम्भ कहे जाने वाले मर्यादा महोत्सव का 155वां आयोजन कोयम्बत्तूर के कोडेसिया में समायोज्य है। इसमें भाग लेने के देश ही नहीं, विदेशों से भी श्रद्धालुओं के आने का क्रम आरम्भ हो गया है। इसमें आचार्यश्री द्वारा विभिन्न घोषणाएं की जाती हैं।